D:\party\Deepak

VICTIMS OF OUR TIMES?

OR

STALWART IN THE WORD?

समय की बन्धन में कमजोर है?

या वचन में बलवन्त है?

समय की बन्धन में कमजोर है?
या वचन में बलवन्त है?

कलिसिया के नाम से हम चारों ओर भवन और बिल्डिंग को देखते है चाहे उस दीवारे भीतर परमेश्वर का जीवित वचन का अनुपस्थिति भी क्यों न हो। परमेश्वर का वचन का दृढ़ता से, पवित्रता से और स्पष्ट रूप से शिक्षा देना कलिसीया का कर्तव्य है। समय का चलते चलते शैतान बहुत सारे संघठनों और कलिसीयाओं में से थोड़ा थोड़ा करके सत्य वचनों का त्याग करवाकर मनुष्य का परंपरा का पालन करवाना सिखाता है। कलीसियों को जो अनुशासन चाहिए वह भी आजकल कलीसियों में देखने को नही मिलता। अनुशासन का अर्थ शिक्षा, सुधार और धार्मिक उपदेश। कलीसियों में परमेश्वर का वचन का सही रूप से और अनुशासन के अनुसार शिक्षा दिया जाना चाहिए, आजकल गलत शिक्षाएं कलीसियों में आ चुका है। आजकल लूथरन कसीलिया कहनेवाला कुछ लोग अनुग्रह से पाप क्षमा करना नाम से एक गलत शिक्षा को फैलाते है। इस शिक्षा के अनुसार लोग जो व्यक्ति पाप करते है वे भी पवित्र प्रभु भोज में शामिल किए जाते हैं। वचन के अनुसार वे लोग प्रभु भोज के लिए योग्य नही है, उनको अनुमति नही दिया जाना चाहिए। 1 कुरिन्थियों 11:27-30 के अनुसार निर्बलता में कोई भी अगर लोगों के मध्य परमेश्वर का वचन का आदर न करे तब यह प्रेम की कमी या प्रेम रहित काम के नाम गिना जाएगा। वह सचमुच प्रेम नही है।

हमारा एक अच्छा मसीही अभ्यास है, आजकल अनेक कलीसियाओं में उसे नही अपनाते हैं; कारण प्रेम का अभाव। वह उस अभ्यास का प्रेम नही करते, यह उनको अच्छा नही लगता।

उस अच्छा मसीह अभ्यास का नाम है सार्वजनिक क्षमा-प्रार्थना। अपनी पापों को लोगों के सामने खुलकर मानना है और पश्चत्ताप करना है उसके बाद

परमेश्वर के द्वारा घोषित क्षमा-दान को प्राप्त करना है तथा भाइयों से क्षमा उपहार के रूप में ग्रहण करना है। मनुष्य का घमण्ड इस अच्छा अभ्यास का रुकावट करता है।

आजकल लोगों के बीच में प्रचलित कुछ स्थिति इस प्रकार है – "आपका खुद का काम देखो"। "अन्य किसीका काम में दाखल मत करो; अपना काम खुद संभालो" यह सब हसीमजाओं या परिहास की बात है। आप यदि किसी को समझने की कोसीश करते तो घमण्डी लोग आप को इस प्रकार बातें बोलेंगे। परमेश्वर का वचन कहता है पत्तन से पहले घमण्ड और विनाश से पहले अहंकार आता है। परन्तु एक प्रभु भय माननेवाला मनुष्य जो सचमुच नम्र और दीनता में है, वह परमेश्वर का वचन की शिक्षा के सामने झुक कर सार्वजनिक क्षमा-प्राप्त प्रार्थना करता है। "इसलिए परमेश्वर के सामर्थी हाथ के नीचे दीन बनो, जिससे कि वह तुम्हें उचित समय पर उन्नत करे।" 1 पतरस 5:6 और "ठट्ठा करने को वह ठट्ठों में उड़ाता है, और दीन-दुखियों पर अनुग्रह करता है।" नीति वचन 3:34.

पाप स्वीकार :

परमेश्वर का वचन कहता है हम अपनी पापों को परमेशवर के सामने और परस्पर स्वीकार करें। याकूब 5:16. वास्तविक पाप स्वीकार हमारे शरीर, आत्मा और प्राण के लिए लाभदायक है। यदि हम किसी भाई या बहन के विरुद्ध पाप किया हो तो हम उनसे माफी माँग कर क्षमा प्रार्थना करना उचित है। वे लोग जिसके विरुद्ध पाप किया था पूर्ण मन से माफ करना उचित है ताकि वे भी परमेश्वर से और भाई-बहन से भी क्षमा पाया जैसे हमारे प्रभु हमे बहुत अयात् से क्षमा किया हम भी ऐसा ही दूसरों को क्षमा करें।

हमारे दिल में उस माई या बहन के लिए प्रेम होने के कारण हम जाकर उस का गलती को उस से बोलते है। अगर वह मान लेता है तब हम उसे माफ कर देना चाहिए। अगर नही मानता है तो हमारे प्रभु यीशु मसीह हमें सिखाया

तरीका का उपयोग करें जो मत्ती का 18 अध्याय में है। यह वचन आजकल लोगों के विच बहुत ही कम उपयोग होता है। साधारणतः सब को मालूम है कि सार्वजनिक पाप स्वीकार के बारे में हम प्रेरितों के काम 19 : 18-20 पढ़ते हैं "जिन्होंने विश्वास किया था उनमें से बहूतों ने आकर अपने कामों को मान लिया और उन्हें प्रकट कर दिया। बहुत-से लोगों ने जो जादू-टोना किया करते थे अपनी अपनी पोथियां लाकर इकट्ठी कीं और सब के सामने जला दीं। जब उन्होंने उनका मूल्य आंका तो लगभग पचास हज़ार चांदी के सिक्कों के बराबर निकला। इस प्रकार प्रभु का वचन सामर्थ्य के साथ फैलता और प्रबल होता गया"।

एकता :

शान्ति के बन्धन तथा आत्मा की एकता और प्रेम को बनाये रखे। और यत्न करो कि मेल के बन्धन में आत्मा की एकता सुरक्षित रहे। एक ही देह है और आत्मा भी एक है; ठीक उसी प्रकार अपनी बुलाहट की एक आशा में तुम भी बुलाए गए थे। एक ही प्रभु, एक ही वुश्वास, एक ही बपतिस्मा, और सब का एक ही परमेश्वर पिता है, जो सब के ऊपर और सब के मध्य और सब में है। इफिसियों 4: 3-6, हम एक दुसरे से दूर नही है। हम सब मसीह शरीर रूपी कलीसियां में अंगों है। हमारे एकता कागज में लिखा हुआ एकता नही है परन्तु तन, मन और दिल की एकता है। अगर हम में से कोई भी एक भाइ और बहन शैतान की चाल में फसकर पाप में गिर जाता है तो हम सब मिलकर उसको डॉटे कि वह अपना पाप को मान ले और क्षमा प्रार्थना करले। यदि वह पश्चत्ताप करता है और क्षमा प्रार्थना करता है तो उसको क्षमा मिलता है। परन्तु यदि वह पश्चत्ताप नही करता है तो हम सब मिलकर उसे हमारे संगति से बाहर निकाल देते है; वह हमारे लिए एक अविश्वासी और कर असुल करनेवाले के तुल्य मे वन जाता है। एक पश्चत्ताप नहीं करनेवाला पापी जो सीधा नरक की ओर चला जाता है। ठीक उसी प्रकार जब वह अपना पाप को पश्चात्ताप करता है और क्षमा प्रार्थना करता है तो हम सब कलीसिया मिलकर

उसे हमारे बीच ग्रहण करते है। हम उसके लिए परमेश्वर का प्रशंसा करते है और परमेश्वर का वचन के अनुसार उसको फिर से प्रेम देकर प्रभु में और वचन में बने रहने के लिए उसे प्रोत्साहित करते है।

"सार्वजैनिक क्षमा प्रार्थना यह है कि पाप किया हुआ व्यक्ति सब के सामने उस पाप को छोड़ देना है। और परमेश्वर से और कलीसिया से क्षमा-मांगना है, और क्षमा प्राप्त करना है।" "जो लोग पाप करते रहते हैं, उन्हें सब के सामने डाट जिस से अन्य लोग भी पाप करने से डरे।" I तिमुथियुस 5:20

उद्देश्य :

सार्वजनिक पश्चत्ताप का मुक्य उद्देश्य है क्षमा पाना। पूर्ण दिल से जब मन फिराकर प्रभु से माफी माँगता है प्रभु उसे क्षमा कर देता। इसलिए कसीलिया भी उसे क्षमा कर देना चाहिए।

अभ्यास :

जैसे पाप सार्वसाधारण रूप से किया जाता है ऐसे ही क्षमा प्रार्थना भी सबके सामने खुलकर होना चाहिए और क्षमादान भी ऐसा ही होना चाहिए। मनुष्य के द्वारा विचार में कमी हो सकता है। लेकिन परमेश्वर का विचार न्याय और जथार्थ है। परमेश्वर का वचन से हम ने देखा कि सब का सामने या सर्वसाधारण रूप से पाप क्षमा प्रार्थना करना और क्षमादान करना तथा दिल से ग्रहण करने का मुख्यतः के बारे में। चाहें लोग हमारे बारे में कुछ बी कहें, उस से हम कुछ फरक नहीं पड़ता। क्योंकि दुनिया के लोग हमारे प्रभु के बारे में भी कहते थे कि वह बलजिबूल (भूत) के द्वारा आश्चर्य काम करता है हम अपनी प्रभु से प्रेम रखते है और उनका वचन के अनुसार चलते है, चाहे लोक हमारे बारे में कुछ भी क्यूं न कहे। हम अपनी परमेश्वर को प्रशत्र करनेवाला काम करते है, उनका इच्छापूर्ण

करते है। सुसमाचार का और प्रभु यीशु मसीह के नाम से पापों को क्षमा का प्रचार करते हैं। हे भाइयो, अपने बुलाए जाने पर तो विचार करो कि शरीर के अनुसार तुम में से न तो बहुत बुद्धिमान, न बहुत शक्तिमान और न बहुत कुलीन बुलाए गए। परन्तु परमेश्वर ने संसार के मूर्खों को चुन लिया है कि ज्ञानवानों को लज्जित करे, और परमेश्वर ने संसार के निकृष्ट और तुच्छों को, वरन उनको जो है भी नहीं चुन लिया, कि उन्हें जो हैं व्यर्थ ठहराए, जिससे कि कोई प्राणी परमेश्वर के सामने घमण्ड न करें। परन्तु उसी के कारण तुम मसीह यीशु में हो, जो हमारे लिए परमेश्वर की ओर से ज्ञान, धार्मिकता, पवित्रता और छुटकारा ठहरा।" 1 कुरिन्थियों 1: 26-31 सारे आदर और महिमा हमारे परमेश्वर को हीं मिले। आमीन